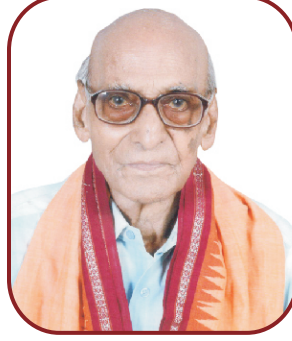


Padma Shri



SHRI NARASINGHA PRASAD GURU

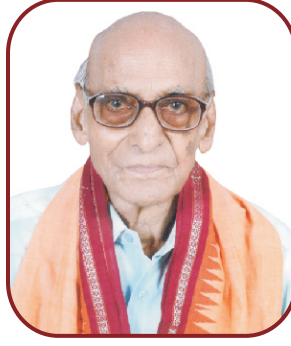
Shri Narasingha Prasad Guru is a renowned litterateur of Koshali language in Odisha. He has dedicated half-a-century of his life for the enrichment, elevation and propagation of Koshali language which is the mother-tongue of about 1.5 crore people of Western Odisha. Through his incessant writings on Koshali grammar, vocabulary and literature, he has given a new life to the hitherto neglected Koshali language.

2. Born on 15th October, 1934, Shri Narasingha after completion of his education, joined as a teacher and retired as Head Master of Government High School. He has written 36 books on various subjects relating to society, art, culture, music, language and literature, 80 articles and about 500 rhythmic lyrics for the enrichment of Kosali language. He has compiled and published a dictionary consisting of 17,000 words in 700 pages — "KOSHALI-ODIA ABHIDHAN" - which is a monumental work and his magnum opus. This dictionary is his greatest contribution to Koshali and a permanent gift to the people of Koshal.

3. Shri Narasingha has written and published three valuable books on Ayurvedic Herbal treatment of common diseases and has distributed them free of cost to the poor people so that they can make use of the locally available medicinal plants and herbs to treat common diseases without incurring any expenses. His Koshali lyrical poems, composed in sweet musical-forms, have been broadcasted by All India Radio, Sambalpur for decades and they have achieved massive popularity and wide recognition.

4. Shri Narasingha has been honoured, recognized, felicitated and awarded by more than 25 socio-cultural organizations and institutions for his extraordinary contribution to Koshali language, literature and culture. These honours include Odisha Sahitya Academy Award, 2010; Western Odisha Cultural Award by Sambalpur University in 2007; Bharat Chandra Nayak Memorial Award from Sambalpur University in 1983; State Senior Citizens' Award in 2018; Koshali Sanskrutika Sangha Award in 2005; Koshal Ekta Manch Award in 2012; Bhagirathi Nepak Sahitya Samman in 2018 and many others. At this ripe age of 92, he is neither tired, nor retired and till now and has been incessantly pursuing his life's passionate cause and writing for the development and recognition of Koshali language.

पद्म श्री



श्री नरसिंह प्रसाद गुरु

श्री नरसिंह प्रसाद गुरु ओडिशा में कोशाली भाषा के प्रसिद्ध साहित्यकार हैं। उन्होंने अपने जीवन के पचास साल कोशाली भाषा के संवर्धन, उत्थान और प्रसार में समर्पित कर दिए। कोशाली पश्चिमी ओडिशा के लगभग 1.5 करोड़ लोगों की मातृभाषा है। कोशाली व्याकरण, शब्दावली और साहित्य पर लगातार लिखते हुए, उन्होंने अब तक उपेक्षित कोशाली भाषा को एक नया जीवन दिया है।

2. 15 अक्टूबर, 1934 को जन्मे, श्री नरसिंह ने अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद, सरकारी उच्च विद्यालय के शिक्षक के रूप में नौकरी शुरू की और हेडमास्टर के रूप में सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने समाज, कला, संस्कृति, संगीत, भाषा और साहित्य से संबंधित विभिन्न विषयों पर 36 पुस्तकें, कोशाली भाषा के संवर्धन के लिए 80 लेख और लगभग 500 लयात्मक गीत लिखे। उन्होंने 700 पृष्ठों में 17,000 शब्दों का एक शब्दकोश संकलित और प्रकाशित किया है। यह शब्दकोश —‘कोशाली—ओडिया अभिदान’ एक महत्वपूर्ण कार्य और उनकी महान रचना है। यह शब्दकोश कोशाली के लिए उनका महानतम योगदान और कौशल के लोगों के लिए एक स्थायी उपहार है।

3. श्री नरसिंह ने सामान्य रोगों के आयुर्वेदिक हर्बल उपचार पर तीन मूल्यवान पुस्तकें लिखीं और प्रकाशित कीं और गरीबों में मुफ्त में बांटीं ताकि वे स्थानीय तौर पर उपलब्ध औषधीय पौधों और जड़ी-बूटियों का इस्तेमाल करके अपने सामान्य रोगों का इलाज कर सकें और उन्हें कुछ खर्च भी न करना पड़े। मधुर संगीत में रचित उनकी कोशाली गीतात्मक कविताएं कई दशकों से आकाशवाणी, संबलपुर द्वारा प्रसारित की जाती रही हैं और उन्हें अत्यधिक लोकप्रियता मिली है और उन्हें व्यापक रूप से सराहा गया है।

4. श्री नरसिंह को कोशाली भाषा, साहित्य और संस्कृति में उनके असाधारण योगदान के लिए 25 से अधिक सामाजिक—सांस्कृतिक संगठनों तथा संस्थानों ने सम्मानित और पुरस्कृत किया गया है। इन सम्मानों में ओडिशा साहित्य अकादमी पुरस्कार, 2010; 2007 में संबलपुर विश्वविद्यालय द्वारा पश्चिमी ओडिशा सांस्कृतिक पुरस्कार; 1983 में संबलपुर विश्वविद्यालय से भारत चंद्र नायक स्मारक पुरस्कार; 2018 में राज्य वरिष्ठ नागरिक पुरस्कार; 2005 में कोशाली संस्कृतिका संघ पुरस्कार; 2012 में कोशल एकता मंच पुरस्कार; 2018 में भागीरथी नेपक साहित्य सम्मान और कई अन्य पुरस्कार शामिल हैं। 92 की इस अधिक आयु में भी श्री नरसिंह न तो थके हैं, न रिटायर हुए हैं और अब तक वे अपने जीवन के मकसद को लगातार आगे बढ़ाते रहे हैं तथा कोशाली भाषा के विकास और पहचान के लिए लिखते रहे हैं।